International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 900-902

अध्यात्म रामायण में स्वयंप्रभा का तप

[1] डॉ0 वेद प्रकाश मिश्र, [2] श्रीमती उमा सिंह चंदेल

[1] प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष, डॉ.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] पी–एच.डी. शोधछात्रा, डॉ.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र में अध्यात्मरामायण में वर्णित गन्धर्वपुत्री स्वयंप्रभा के तप का विवरण प्रस्तुत किया है। अध्यात्मरामायण के किष्किन्धा काण्ड के छठवें सर्ग में स्वयंप्रभा का वर्णन है। स्वयंप्रभा दिव्य नामक गंधर्व की पुत्री थी। स्वयंप्रभा दानवों के विश्वकर्मा मयदानव की पुत्री हेमा की सखी थी। वह श्रीहरि विष्णु की उपासना कर मोक्ष चाहती थी, जो हमेशा श्रीविष्णु की पूजा उपासना तथा तप में लीन रहा करती थी। स्वयंप्रभा की दिव्यरूपिणी सखी हेमा ने अपने नृत्य से महादेव को प्रसन्न किया था। पूर्वकाल में जब हेमा ब्रह्मलोक जाने लगी, तब उसने स्वयंप्रभा से कहा – तुम प्राणियों से रहित इसी महल में तप करो। त्रेतायुग में साक्षात् नारायण राजा दशरथ के यहाँ जन्म लेंगे तथा पृथ्वी का भार उतारने हेतु वन में विचरेंगे। हेमा ने ही स्वयंप्रभा से कहा था कि राम की भार्या को कुछ वानर खोजते हुए इसी गुफा में आयेंगे उनके द्वारा ही तुम्हारा श्रीराम का साक्षत दर्शन होगा जिसके बाद तुम मोक्ष को प्राप्त कर लोगी। अपनी सखी हेमा के कहने पर ही स्वयंप्रभा श्रीराम दर्शन एवं मोक्ष की आकांक्षा से हजारो वर्ष तप किया और अंत में श्रीराम का दर्शन कर परम धाम को चली गयी।

मुल शब्द : अध्यात्मरामायण, गन्धर्वपुत्री स्वयंप्रभा, किष्किन्धा काण्ड।

प्रस्तावना

स्वयंप्रभा के तप का स्वरूप

अध्यात्मरामायण में स्वयंप्रभा के तप का वर्णन किष्किन्धा काण्ड में है। स्वयंप्रभा विश्वकर्मा की पुत्री हेमा की सखी थी। उसी हेमा ने कहा था कि त्रेतायुग में स्वयं भगवान नारायण राम के रूप में जन्म लेंगे। तब तुम्हें तुम्हारी तपस्या का फल प्राप्त होगा। स्वयंप्रभा हेमा के कहने पर हेमा द्वारा प्रदान किये गये महल में सदियों तक मोक्ष की इच्छा से भगवान विष्णु की तपस्या करती रही। वह सदा श्रीविष्णु की उपासना एवं चिन्तन में लीन रहती थी।

राक्षस रावण द्वारा सीता के हरण किये जाने के पश्चात् वानरराज सुग्रीव के आदेश से दक्षिण दिशा में अधिक प्रयत्न के साथ हनुमानजी, गन्धमादन और अंगद आदि वीरों को भेजा।[1] ये सारे वीर गुफाओं और घने जंगलों में जानकी को खोजने लगे। गिरिराज विंध्य पर जो दुर्गम स्थान थे वहाँ भी उन्होने अन्वेषण किया। इस प्रकार घने वनों में घूमते–घूमते उनके कण्ठ, ओष्ठ और तालु सूख गये, तब उन्होने वहाँ तृण, गुल्म और लता आदि से ढँकी हुई एक विशाल गुफा देखी।[2]

आद्रपक्षान् क्रौन्चहंसान्निः सृतान्ददृशुस्ततः।
अस्त्रास्ते सलिलं नूनं प्रविशामो महागुहाम्।।[3]

अर्थात् उन्होने देखा कि उस गुफा में से भीगे हुए पंखो वाले क्रौन्च और हंस पक्षी निकल रहे है। तब यह कहकर कि चलो इस गुफा में चलें, इसमें जल अवश्य होगा। अंदर जाने पर दूर तक अंधकार के अनन्तर उन्होने देखा कि वहाँ स्वच्छ जल से परिपूर्ण कई सरोवर है। सुन्दर–सुन्दर वृक्ष हैं। पास ही, मणिमय वस्त्रालंकारों युक्त और दिव्य भक्ष्य–भोज्य आदि समाग्रियों से सम्पन्न भवन है।[4]

प्रभया दीप्यमानां तु ददृशुः स्त्रियमेककाम्।
ध्यायन्तीं चीरवसनां योगिनीं योगमास्थिताम्।।[5]

अर्थात् उस भवन में योगाभ्यास तत्पर एक योगिनी थी, अपने तेज से वह उस स्थान को प्रकाशित कर रही थी तथा वह स्त्री शरीर पर चीर वस्त्र धारण किये उस समय ध्यान कर रही थी। उसे देख उन्होने प्रणाम किया तब उस देवी ने उनसे पुछा– तुम लोग कौन हो और कहाँ से आये हो? तथा इस स्थान को क्यों भ्रष्ट कर रहे हो? उसे सुनकर हनुमान जी ने कहा– देवी! सुनिये[6]

अयोध्या अधिपति राजा दशरथ के पुत्र श्रीराम पिता की आज्ञा से भार्या और भाई लक्ष्मण सहित वन आये थे, को दुरात्मा रावण हरण कर ले गया। हम उन्ही की खोज में यहाँ आये है। दैवयोग से हम इस गुफा में आ गये। हे शुभे! आप यहाँ किसलिए रहती हैं और आप कौन है? यह हमें बताइये।7 यह सुन योगिनी बहुत हर्षित हुई और वानरवीरों से बोली– तुम लोग इच्छानुसार फल–मूलादि खाकर अमृतमय जलपान करो। फिर मेरे पास आना तब मै अपना वृतान्त सुनाऊँगीं। तब वानर जलपान आदि कर उस देवी के पास आकर हाथ जोड़कर खड़े हो गये–

ततः प्राह हनूमन्तं योगिनी दिव्यदर्शना।।
हेमा नाम पुरा दिव्यरुपिणी विश्वकर्मणः।
पुत्री महेशं नृत्येन तोषयामास भामिनी।। [8]

तदनन्तर वह दिव्यदर्शना योगिनी हनुमान जी से बोली– पूर्वकाल में विश्वकर्मा की हेमा नामक एक दिव्यरुपिणी पुत्री थी। उसने अपने नृत्य से महादेव को प्रसन्न किया प्रसन्न होकर शिवजी ने उसे यह विशाल और दिव्य महल रहने के लिए दिया। यहाँ वह सुन्दर दाँतों वाली हेमा ने हजारो वर्ष निवास किया। मैं उसी हेमा की सखी दिव्य नामक गन्धर्व की पुत्री हूँ। मेरा नाम स्वयंप्रभा है। मुझे मोक्ष की इच्छा है। अतः मैं सर्वदा श्री विष्णु की उपासना में तत्पर रहती हूँ।[9] हेमा जब ब्रह्मलोक जाने लगी, तब उसी ने मुझे यहाँ रहकर तपस्या करने को कहा था। त्रेतायुग में साक्षात् नारायण राजा दशरथ के पुत्र के रुप मे जन्म लेकर पृथ्वी का भार उतारने के

लिये वन में विचरेंगें।[10] हेमा ने आगे मुझसे कहा था कि–

माार्गन्तो वानरास्तस्य भार्यामायान्ति ते गुहाम्।
पूजयित्वाथ तान् नत्वा रामं स्तुत्वा प्रयत्नतः।।[11]

अर्थात् उन्ही राम की भार्या को खोजते हुए कुछ वानर तेरी गुफा में आयेंगें। तुम उनका अच्छी तरह से सत्कार करके श्रीराम के पास जाकर उनकी वन्दना और स्तुति करके श्रीविष्णु के नित्यधाम को चली जायेगी। अतः हे वीरों! अब मैं शीघ्र ही श्रीराम का दर्शन चाहती हूँ। तुम लोग अपनी आँखे मुँद लो, अभी गुफा के बाहर पहुँच जाओगे। वानरवीरो ने ऐसा ही किया और आँख बन्द करते ही गुफा के बाहर उसी वन में पहुंच गये।[12] इधर स्वयंप्रभा भी–

सापि त्यक्त्वा गुहां शीघ्रं ययौ राघवसन्निधिम्।
तत्र रामं ससुग्रीवं लक्ष्मणं च ददर्श ह।।[13]

अर्थात् वह योगिनी भी उस गुफा को छोड़कर तत्काल श्रीराम के पास आयी और सुग्रीव तथा लक्ष्मण सहित उनका दर्शन किया। उस बुध्दिमती स्वयंप्रभा ने श्रीराम की प्रदक्षिणा कर उन्हे प्रणाम किया और फिर गद्‌गद् वाणी से इस प्रकार कहने लगी– हे राजाधिराज! मै आपके दर्शन के लिए यहाँ आयी हूँ। मैने आपका दर्शन प्राप्त करने के लिए ही गुफा में रहकर सहस्त्रों वर्षों तक दुष्कर तपस्या की है।[14] आज मेरा वह तप सफल हो गया। आज के इस शुभ दिन में मै साक्षात् मायातीत तथा समस्त भूतों में अलक्षितभाव से बाहर भीतर विराजमान आप अपने शुध्द स्वरूप को योगमाया से आवृत कर मनुष्य रूप में प्रकट हुए है। हे राम! आप शुध्द स्वरूप को आज्ञानी लोग नही देख सकते। हे रघुनाथ! आपने महान भगवत् भक्तो के भक्तियोग का विधान करने के लिए ही अवतार लिया है। हे राम! मै तमोगुण वाली आपको कैसे जान सकती हूँ ? हे रघुश्रेष्ठ! मेरे हृदय में आपका यही तपस्वी रूप विराजमान रहे। आज मुझे आपके उन मोक्षदायक चरण कमलों का दर्शन प्राप्त हुआ है।[15] जो संसार रूपी सागर से पार कराने वाले है। वह आगे कहती है कि–

नमः स्वात्माभिरामाय निर्गुणाय गुणात्मेन।[16]

जो स्वरूप से निर्गुण तथा आरोप से सगुण है, उस राम को मै प्रणाम करती हूँ। हे राम! मै काल रूप से सबका नियन्ता आदि मध्य और अन्तरहित, सर्वत्र व्यादा परात्पर पुरूष मानती हूँ। हे देव! मानवचरित्रों का अनुकरण करते हुए आप जो लीलाएँ करते है उसे कोइ नही समझ सकता। हे सीतापते! आप अजन्मा, अकर्ता और अभोक्ता है। आपके जो देव, तिर्यक और मनुष्य आदि योनियों में जन्म और कर्म होते है वह आपकी लीला ही है।[17] हे नरेन्द्र! कहते है, आप अविनाशी ईश्वर ने कथा–श्रवण की सिध्दी लिए ही अवतार लिया है। यह भी कहा जाता है कि महाराज दशरथ को उनकी तपस्या का फल देने के लिए आपने जन्म लिया है। किन्ही का ऐसा मत भी है कि ब्रह्माजी के प्रार्थना करने पर भूमि के भारभूत राक्षसों का नाश करने के लिए आप सर्वव्यापक होते हुए भी मनुष्य रुप में अवतीर्ण हुए है।[18] हे राम मैं आपके माया के गुणो के वशीभूत हूँ। ऐसे भी वाणी के विषय न होने के कारण मैं आप विष्णु की स्तुति करने में असमर्थ हूँ। स्वयंप्रभा अन्त में कहती है कि – हे देव –

कथं त्वां देव जानीयां स्तोतुं वाविषयं विभुम्।
नमस्यामि रघुश्रेष्ठ वाणसनशरान्वितम्।
लक्ष्मणेन सह भ्राता सुग्रीवादिभिरन्वितम्।।[19]

भाई लक्ष्मण और सुग्रीव आदि सहित आप धनुर्धारी रघुश्रेष्ठ को मैं केवल प्रणाम करती हूँ।

स्वयंप्रभा के तप का फल

योगिनी स्वयंप्रभा के तप एवं उसके द्वारा स्तुति करने से प्रणतयापापहारी श्रीराम अत्यन्त प्रसन्न हुए और उस अनन्य भक्ता स्वयंप्रभा से बोले– तुम क्या वरदान चाहती हो? तब उसने अत्यन्त भक्तिपूर्वक श्रीराम से कहा–

सा प्राह राघवं भक्तया भक्तिं ते भक्तवत्सल।
यत्र कुत्रापि जाताया निश्चलां देहि मे प्रभो।।[20]

हे प्रभो! हे भक्तवत्सल! मैं जब भी जन्म लूँ, आप मुझे अपनी अविचल भक्ति दीजिए। प्रत्येक जन्म में मेरा संग आपके भक्तों से ही हो, निरन्तर राम–राम जपती रहूँ।। हे राम! मेरे हृदय में आपका श्यामल रुप सीता और लक्ष्मण के सहित सदा वास करे, जो धनुष–बाण धारण किये हुए है तथा जो पीताम्बर, मुकुटविभूषित एवं कुण्डल आदि से सुशोभित है।[21] हे प्रभो ! इसके सिवा मै और कोई वर नहीं चाहती। तब श्रीराम ने कहा– हे महाभागे! ऐसा ही होगा। अब तुम बद्रिकाश्रम जाओ वहाँ मेरा स्मरण करती हुई तुम शीघ्र ही शरीर को त्यागकर मुझ परमात्मा को ही प्राप्त हो जाओगी।[22] श्रीराम के अमृत के समान मधुर वचन को सुनकर स्वयंप्रभा उसी समय पुण्यक्षेत्र बद्रिकाश्रम को चली गई जहाँ बहुत से बेरो के वृक्ष लगे हुए थे। वहाँ श्रीराम नाम का जप करती हुई अन्त में स्वयंप्रभा परमपद(मोक्ष) को प्राप्त करती है।

स्वयंप्रभा के तप का प्रभाव

स्वयंप्रभा जो एक गंधर्वपुत्री थी, उसने अपनी तपस्या से श्रीराम को प्रसन्न किया तथा वरदान के रुप में उसने श्रीराम की परमभक्ति तथा मोक्ष की इच्छा की। श्रीराम ने उसे अपनी भक्ति एवं मोक्ष का वर प्रदान किया। इस प्रकार स्वयंप्रभा के तप का उद्‌देश्य श्रीराम का साक्षात् दर्शन एवं परमपद की प्राप्ति थी, जिसे श्रीराम ने पूर्ण किया। यही स्वयंप्रभा के तप का प्रभाव है जिसके कारण स्वयंप्रभा ने वर की प्राप्ति की थी।

स्वयंप्रभा के तप से हमें यह सीख मिलती है कि यदि हम निष्काम भाव से ईश्वर की भक्ति करते है, तब निश्चय ही हमें हमारी तपस्या सफल होती है। तापसी स्वयंप्रभा ने श्रीराम की अनन्य भक्ति से अनेक शक्तियाँ प्राप्त कर श्रेष्ठ वर मोक्ष को प्राप्त किया। अर्थात जो इस संसार से मुक्त होकर बार–बार जन्म और मृत्यु से मुक्त हो गयी।

संदर्भ

1. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 24/पृष्ठ सं. 174 ISBN 81-293-0014-1
   नलं सुषेणं शरभं मैन्दं द्विविमेव च।
   प्रेषयामास सुग्रीवो वचनं चेदमब्रवीत्।। अ.रा.कि.कां, 6/24
2. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 34/पृष्ठ सं. 174
   विक्रमन्तो महारण्ये शुष्ककण्ठोतालुका।
   ददृशुर्गव्हरं तत्र तृणगुल्मावृतं महत्।। अ.रा.कि.कां, 6/34
3. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 35/पृ.सं.175
   आद्रपक्षान क्रौन्चहंसान्निः।
   अत्रास्ते सलिलं नून प्रविशामो महागुहाम्।। अ.रा.कि.कां, 6/35
4. मुनिलाल संवत् (2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर

प्रकाशन श्लोक 39/पृ.सं.175
दिव्यभक्ष्यान्नसहितान्मानुषैः परिवर्जितान्।
गुहान् सर्वगुणोपेतपन् मणिवस्त्रादिपूरितान।। अ.रा.कि.कां, 6/39
5. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 40/पृ.सं.175 अ.रा.कि.कां. 6/40
6. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 41–42/पृ.सं.175
प्रणेमुस्तां महाभागां भक्तयां भीत्या च वानराः।।
दृष्टवा तान्वानरादेवी प्राह यूयं किमागताः।।
कुतो वा कस्य दूता वा मत्स्थानं किं प्रधर्षथ।
तच्छ्रुत्वा हनुमानाह श्रृणु वक्ष्यामि देति ते।। अ.रा.कि.कां. 6/41–42
7. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 47/पृ.सं.175
प्रविष्ठा गव्हरं घोरं दैवादत्र समाागताः।
त्वं त्वा किमर्थमत्रासि का वा त्वं वद न शुभे।। अ.रा.कि.कां, 6/47
8. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 50–51/पृ.सं.176
अ.रा.कि.कां, 6/51–52
9. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 52–53/पृ.सं.176
तुष्टो महेशः प्रददाविदं दिव्यपुरं महत्।
अत्र स्थिता सा सुदती वर्षाणामयुतायुतम्।।
तस्या अहं सखी विष्णुतत्परा मोक्षकांक्षिणी।
नाम्ना स्वयंप्रभा दिव्यगन्धर्वतनया पुरा।। अ.रा.कि.कां. 6/52–53
10. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 55/पृ.सं.176त्र
त्रेतायुगे दाशरथिर्भूत्वा नारायणोअव्ययः।
भूभारहरणार्थाय विचरिष्यति कानने।। अ.रा.कि.कां. 6/55
11. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 56/पृ.सं.176 अ.रा.कि.कां. 6/56
यूयं पिदध्वमक्षीणी गमिष्यथ बहिगुर्हाम्।
तथैव चक्रुस्ते वेगाद्गताः पूर्वस्थितं वनम्।। अ.रा.कि.कां. 6/58
12. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 59/पृ.सं.176 अ.रा.कि.कां. 6/58
13. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 59/पृ.सं.176 अ.रा.कि.कां. 6/59
14. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 61/पृ.सं.177
दासी तवाहं राजेन्द्र दर्शनार्थमिहागता।
बहुवर्षसहस्त्राणि तप्तं मे दुश्कर तपः।। अ.रा.कि.कां. 6/61
15. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 66/पृ.सं.177
ममैतदेव रुपं ते सदा भातु हृदालये।
राम ते पाद युगलं दर्शितं मोक्षदर्शनम्।। अ.रा.कि.कां. 6/66
16. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 69/पृ.सं.177 अ.रा.कि.कां. 6/69
17. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 72/पृ.सं.177
अजस्याकर्तुरीशस्य देवतिर्यड्.नरादिषु।
जन्मकर्मादिकं यद्यत्तदयन्तविडम्बनम्।। अ.रा.कि.कां. 6/72
18. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 75/पृ.सं.178
ब्रह्मणा नररूपेण जातोडयमिनि केचन।
श्रृण्वन्ति गायन्ति च ये कथास्ते रघुनन्दन।। अ.रा.कि.कां. 6/75
19. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 77/पृ.सं.178 अ.रा.कि.कां. 6/77
20. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 79/पृ.सं.178 अ.रा.कि.कां. 6/79
21. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 81/पृ.सं.178
मानसं श्यामलं रुपं सीतालक्ष्मणसंयुतम्।
धनुर्बाणधरं पीतवाससं मुकुटोज्ज्वलम्।। अ.रा.कि.कां. 6/81
22. मुनिलाल संवत्(2064) अध्यात्मरामायण गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन श्लोक 83/पृ.सं.178
भवत्वेव महाभागे गच्छ त्वं बदरीवनमं।
तत्रैव मां स्मरन्ती त्वं त्यक्त्वेदं भूतपंचकम्।
मामेव परमात्मानमचिरात्प्रतिपद्यसे।। अ.रा.कि.कां. 6/83